# बिहार में किसान आन्दोलन

**डॉ. मनीष कुमार**

बिहार में वास्तव में किसान आन्दोलन का मुख्य कारण आर्थिक शोषण रहा है। यह आन्दोलन ब्रिटिश शासन के समय अधिक उग्र हुआ जो उपनिवेशवादी शासन के चहेते जमीदारों द्वारा किसानों से अधिक लगान वसूलने के लिए जमीदारों द्वारा उनको आर्थिक शोषण करने के लिए तरह–तरह के आत्याचार करके किसानों को बदतर जिन्दगी जीने के लिए मजबूर करना यही धीरे–धीरे एक आन्दोलन का रूप ग्रहण करता गया। उपनिवेशवादी परम्परा के पोषक जमीदारों छोटे–छोटे राजाओं और नबाबों ने भी इस प्रकार के अत्याचार में अपनी अहम भूमिका निभाई। जो किसान कठिन परिश्रम करके खेतों में अपने गेहूँ, चावल और अन्य प्रकार के अन्न उगा कर अपने परिवार, गाँव और शहरी लोगों के लिए खाद्यान्न का भार संम्भालते रहे, उन्हें ही जब आर्थिक व शारीरिक अत्याचार का सामना करना पड़े तो उनमें उग्रवादी विचार उत्पन्न होना स्वाभाविक तो है ही। इस कारण बिहार के कुछ क्षेत्रों में उग्रवादी युवकों द्वारा हिंसक आन्दोलन का सहारा लेना पड़ा। काश्तकारों द्वारा किसानों की भूमि छीन लेना यही इस प्रकार के हिंसक आन्दोलन का कारण बना, लेकिन इस प्रकार के आन्दोलन द्वारा कुछ होना नहीं था। इस कारण बिहार में कई समाज सुधारक हुए जिन्होंने किसान आन्दोलन को सही दिशा प्रदान किया। लेकिन सबसे बड़ी समस्या उन्हें संगठित करना था जो हो नहीं पा रहा था।